CHAPTER 9, कबीर के पद

PAGE 132, प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ

11:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:1

1. कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर : कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है,इसके समर्थन में उन्होंने निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

1. संसार में सब जगह एक पवन और एक ही जल है।
2. सभी में एक ही ज्योति समाई है।
3. एक ही मिट्टी से सभी बर्तन बने हैं।
4. एक ही कुम्हार मिट्टी को सानता है।
5. सभी प्राणियों में एक ही ईश्वर विद्यमान है,भले ही प्राणी का रूप कोई भी हो।

11:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:2

2. मानव शरीर का निर्माण किन पंच तत्वों से हुआ है?

उत्तर : मानव शरीर का निर्माण निम्नलिखित पांच तत्वों से हुआ है-

1. अग्नि 2. वायु 3. पानी 4. मिट्टी 5. आकाश

11:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:3

3. जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
इसके आधार पर बताइए कि कबीर की दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

उत्तर : कबीर की दृष्टि में ईश्वर अविनाशी स्वरुप में विद्यमान है। सभी जीवो के अंदर परमात्मा का वास आत्मा के स्वरुप में है जैसे लकड़ी के अंदर अग्नि होती है । ईश्वर सर्वव्यापक,अजर-अमर और अविनाशी है। बढ़ई लकड़ी को अनेक भागो में चीर सकता है परन्तु उसमे व्याप्त अग्नि को नष्ट नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार शरीर नश्वर है परन्तु आत्मा अमर है।

11:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पद के साथ:4

4. कबीर ने अपने को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर : यहाँ "दीवाना" का अर्थ है - पागल। कबीरदास ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर लिया है और वे ईश्वर की भक्ति में लीन हैं। जबकि बाहरी दुनिया आडम्बरों में ईश्वर को खोज रही है। अपनी भक्ति के आम विचारधारा से अलग होने के कारण वह खुद को पागल कहते हैं।

PAGE 132, प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास

11:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पद के आसपास:1

अन्य संत कवियों नानक,दादू और रैदास आदि के ईश्वर सम्बन्धी विचारों का संग्रह करें और उनपर एक परिचर्चा करें।

उत्तर:

कक्षा में अपने साथियो तथा शिक्षकों के साथ मिल कर सामूहिक चर्चा कीजिये तथ उपरोक्त विषयों पे हर विद्यार्थी की राय जानिए। इसके बाद सबके राय का विश्लेषण कीजिये।

2. कबीर के पदों को शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत दोनों में लयबद्ध भी किया गया है। जैसे- कुमारगंधर्व, भारती बंधु और प्रह्लाद सिंह टिपाणिया आदि द्वारा गाए गए पद। इनके कैसेट्स अपने पुस्तकालय के लिए मँगवाएं और पाठ्यपुस्तक के पदों को भी लयबद्ध करने का प्रयास करें।